+918171181080
+919068806410
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(22 September 2023)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शुरुआत और सांस्कृतिक सुरक्षा का मुद्दा
- जलवायु महत्वाकांक्षा शिखर सम्मेलन (Climate Ambition Summit) 2023
- ऋण के NPA होने के 6 महीने के भीतर विलफुल डिफॉल्टर घोषित करें: RBI का प्रस्ताव

भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शुरुआत और सांस्कृतिक सुरक्षा का मुद्दा:

चर्चा में क्यों है?

- लोकसभा में चंद्रयान-3 की सफलता की सराहना करने के साथ ही, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यह बात कही कि "*यह न केवल ISRO के लिए एक सफलता थी, बल्कि यह वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र का एक संकेत भी था और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए भी प्रेरित है और अब देश में सांस्कृतिक महानता का एक नया युग शुरू हो गया है*"।

राष्ट्र के विकास में विज्ञान एवं संस्कृति का समान महत्व:

- रक्षा मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि जहां विज्ञान किसी राष्ट्र और समग्र मानवता के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं संस्कृति भी उतना ही महत्वपूर्ण है।
- उन्होंने दोनों पहलुओं को समान महत्व देने के सरकार के संकल्प का समर्थन किया।

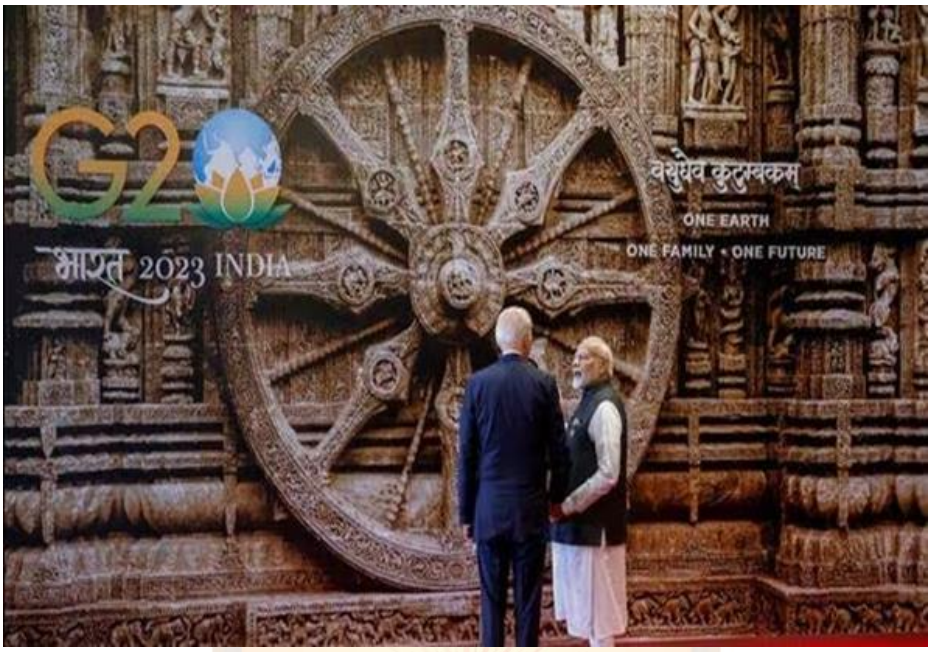

- रक्षा मंत्री ने कहा कि "*विज्ञान मूल्य-तटस्थ है। यह हमें परमाणु ऊर्जा का ज्ञान दे सकता है, लेकिन यह हमारी संस्कृति है जो हमें बताती है कि हम उस शक्ति का उपयोग ऊर्जा के रूप में अपने विकास के लिए करते हैं या हथियार के रूप में दूसरों को नष्ट करने के लिए करते हैं*"।
- "*विज्ञान चाहे कितनी भी प्रगति कर ले, संस्कृति और मूल्यों के बिना वह अधूरा ही रहेगा। जैसा कि मार्टिन लूथर किंग ने कहा था: 'विज्ञान मनुष्य को ज्ञान देता है, जो शक्ति है। धर्म मनुष्य को ज्ञान देता है, जो नियंत्रण है।' जो लोग कहते हैं कि हमें अपनी संस्कृति से छुटकारा पाना चाहिए और विज्ञान को अपनाना चाहिए, उन्हें यह समझना चाहिए कि संस्कृति और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं*"।

- उन्होंने "सांस्कृतिक सुरक्षा" के महत्व पर बल देते हुए इसे सीमा, अंतरिक्ष, साइबर, आर्थिक, सामाजिक, खाद्य, ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा के समान ही महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि किसी राष्ट्र की पहचान बनाए रखने के लिए सांस्कृतिक सुरक्षा जरूरी है और सरकार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को महत्व देते हुए सांस्कृतिक सुरक्षा के प्रति भी उतनी ही गंभीर है जितनी सुरक्षा के मुद्दों को लेकर।
- उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण के बिना किसी भी राष्ट्र ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक प्रगति नहीं की है।
- किसी समाज की सांस्कृतिक विरासत उसके मूल्यों, परंपराओं और साझा अनुभवों की परिणति है, जो एकता और उद्देश्य की भावना को बढ़ावा देती है।
- भारत की एकता इसकी संस्कृति में गहराई से निहित है, जो 5000 से अधिक वर्षों से विकसित हुई है और भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं से परे एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य करती है।
- हमारी आस्था और संस्कृति समावेशी प्रकृति की है। हमारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हमें समस्त मानवता के भाईचारे की अवधारणा सिखाता है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण क्या होता है?

- सांस्कृतिक पुनर्जागरण, जिसे अक्सर "पुनर्जागरण" के रूप में जाना जाता है, एक शब्द है जिसका उपयोग कला, साहित्य, संगीत, दर्शन और अन्य बौद्धिक गतिविधियों सहित संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में नवीनीकृत रुचि और विकास की अवधि का वर्णन करने के लिए किया जाता है।
- शब्द "पुनर्जागरण" स्वयं फ्रांसीसी शब्द "पुनर्जन्म" से लिया गया है और इसे अक्सर यूरोप में ऐतिहासिक काल से जोड़ा जाता है जो लगभग 14वीं से 17वीं शताब्दी तक हुआ था।
- हालांकि, सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अवधारणा को विभिन्न समय अवधियों और क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है।
- इन आंदोलनों की विशेषता संस्कृति, रचनात्मकता और बौद्धिक अन्वेषण का पुनरुद्धार है, जो अक्सर कला, विज्ञान और समग्र रूप से समाज पर स्थायी प्रभाव डालता है।
- सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ:
  - ➢ **कला एवं संस्कृति का विकास:** सांस्कृतिक पुनर्जागरण के दौरान, अक्सर कलात्मक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण विकास होता है। कलाकार और निर्माता नए विचारों और शैलियों को पेश करने के साथ-साथ शास्त्रीय परंपराओं से प्रेरणा ले सकते हैं।

- **बौद्धिक प्रगति:** पुनर्जागरण काल को अक्सर बौद्धिक गतिविधि में वृद्धि के रूप में चिह्नित किया जाता है। विद्वान, दार्शनिक और वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्रों में अभूतपूर्व खोजें और योगदान दे सकते हैं।
- **अतीत के साथ पुनः जुड़ाव:** पुनर्जागरण आंदोलनों में अक्सर प्राचीन कला, संस्कृति, साहित्य और धर्म पर ध्यान देने के साथ शास्त्रीय पुरातनता में एक नई रुचि शामिल होती है।

सांस्कृतिक सुरक्षा क्या है?

- सांस्कृतिक सुरक्षा से तात्पर्य किसी समूह की सांस्कृतिक पहचान, विरासत और मूल्यों की सुरक्षा और संरक्षण से है।
- इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि एक संस्कृति और उससे जुड़ी प्रथाओं, परंपराओं और ज्ञान को बाहरी खतरों या प्रभावों से सुरक्षित रखा जाए जो उन्हें नष्ट कर सकते हैं या कम कर सकते हैं।
- सांस्कृतिक सुरक्षा पर अक्सर स्वदेशी संस्कृतियों और अल्पसंख्यक समूहों के संदर्भ में चर्चा की जाती है, लेकिन यह अपनी सांस्कृतिक अखंडता की रक्षा करने की मांग करने वाले किसी भी समुदाय या समाज पर लागू हो सकती है।
- इसमें समूह की पहचान और कल्याण के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में भाषा, रीति-रिवाजों, कलाओं और परंपराओं को बनाए रखने के प्रयास शामिल हैं।

जलवायु महत्वाकांक्षा शिखर सम्मेलन (Climate Ambition Summit) 2023:

संदर्भ:

- संयुक्त राष्ट्र महासभा के हिस्से के रूप में जलवायु महत्वाकांक्षा शिखर सम्मेलन (CAS) गुरुवार 21 सितम्बर को न्यूयॉर्क में संपन्न हुआ।
- इस सम्मेलन में प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की अनुपस्थिति देखी गई जिनके कार्य वैश्विक उत्सर्जन के भविष्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।
- चीन, अमेरिका और भारत - जो सामूहिक रूप से वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 42% हिस्सा हैं और इस क्रम में शीर्ष तीन उत्सर्जक हैं - सभी शिखर सम्मेलन से अनुपस्थित थे।

CLIMATE AMBITION SUMMIT 2023

- उल्लेखनीय है कि इस शिखर सम्मेलन को "उन नेताओं को प्रदर्शित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो आगे बढ़ने वाले और करने वाले हैं... और जिनके पास पेरिस समझौते के 1.5 डिग्री सेल्सियस लक्ष्य को जीवित रखने और जलवायु संकट की अग्रिम पंक्ति में खड़े लोगों को जलवायु न्याय प्रदान करने के लिए विश्वसनीय कार्य, नीतियां और योजनाएं हैं"।

जलवायु महत्वाकांक्षा शिखर सम्मेलन (CAS) क्या है?

- सरकारों, उद्योग, वित्त, स्थानीय अधिकारियों और नागरिक समाज द्वारा कार्रवाई में तेजी लाने और "पहले प्रस्तावकों और कर्ताओं" से सुनने के लिए, संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने 20 सितंबर 2023 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक जलवायु महत्वाकांक्षा शिखर सम्मेलन बुलाया था।
- शिखर सम्मेलन यह प्रदर्शित करने के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक मील का पत्थर दर्शाता है कि अधिक न्यायसंगत नवीकरणीय-ऊर्जा आधारित, जलवायु-लचीली वैश्विक अर्थव्यवस्था में न्यायसंगत परिवर्तन की गति और पैमाने को तेज करने के लिए सामूहिक वैश्विक इच्छाशक्ति है।

इस सम्मेलन की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल के नवीनतम वैज्ञानिक मूल्यांकन ने एक बार फिर कार्रवाई की तात्कालिकता पर प्रकाश डाला है।
- जलवायु संकट से नुकसान पहले से ही व्यापक है, और वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन रिकॉर्ड स्तर पर बना हुआ है।
- दुनिया को अब और अगले तीन दशकों के दौरान उत्सर्जन में तत्काल और गहरी कटौती की जरूरत है, ताकि ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित किया जा सके और सबसे बुरे प्रभावों को रोका जा सके।
- इस बीच, जो आबादी जलवायु संकट के लिए सबसे कम जिम्मेदार है, वह पहले से ही इसके प्रभावों से पीड़ित है और उसे अनुकूलन और नुकसान और क्षति से उबरने के लिए तत्काल मदद की आवश्यकता है।
- यह समानता और जलवायु न्याय का मुद्दा है जिस पर सरकारों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों को तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

महत्वाकांक्षा:

- देशों के नेताओं (विशेष रूप से प्रमुख उत्सर्जकों) से अपेक्षा की जाएगी कि वे 2030 से पहले अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान प्रस्तुत करें (जैसा कि

ग्लासगो में सहमति हुई थी); अद्यतन नेट-शून्य लक्ष्य; कोई नया कोयला, तेल और गैस न देने की प्रतिबद्धता के साथ ऊर्जा परिवर्तन योजनाएँ; जीवाश्म ईंधन चरण-आउट योजनाएँ; अधिक महत्वाकांक्षी नवीकरणीय-ऊर्जा लक्ष्य; हरित जलवायु निधि प्रतिज्ञाएँ; और अनुकूलन और लचीलेपन पर अर्थव्यवस्था-व्यापी योजनाएँ।

- अंत में, सभी मुख्य उत्सर्जकों और विशेष रूप से सभी G20 सरकारों को 2025 तक अधिक महत्वाकांक्षी अर्थव्यवस्था-व्यापी राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान प्रस्तुत करने के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए कहा जाएगा, जिसमें पूर्ण उत्सर्जन में कटौती और सभी गैसों को शामिल किया जाएगा।

भारत का जलवायु संक्रमण योजना क्या रहा है?

- भारत ने आखिरी बार 2022 में उत्सर्जन की तीव्रता - या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की प्रति यूनिट उत्सर्जन की मात्रा - को 2030 तक 2005 के स्तर से 45% तक कम करने की अपनी जलवायु प्रतिज्ञाओं को अद्यतन किया था, जो 2015 में पेरिस में सहमति लक्ष्य से 10% की वृद्धि दिखता है।
- सरकार अपनी बिजली की 50% जरूरतों को नवीकरणीय, गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा स्रोतों से पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है - जो पेरिस समझौते में प्रतिबद्ध 40% से अधिक है।

- इसने 2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्ष आवरण के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन CO2-समतुल्य [GtCO2e] का अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाने का आश्वासन दिया। 2021 में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत को 2070 तक शुद्ध शून्य प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध किया।
- वैज्ञानिक मूल्यांकन यह है कि भारत की प्रतिबद्धता भी सदी के अंत तक तापमान को 2C से नीचे रखने के लिए अपर्याप्त है। हालांकि, भारत के कम प्रति व्यक्ति उत्सर्जन और वायुमंडल में पहले से मौजूद कार्बन में योगदान ने अन्य विश्लेषकों को यह सुझाव देने के लिए प्रेरित किया है कि भारत पेरिस-सहमत सीमा को बनाए रखने के लिए "अपने उचित हिस्से से अधिक" के लिए प्रतिबद्ध है।

समय खत्म हो चुका है:

- जलवायु संकट सभी लोगों और सभी देशों को प्रभावित करता है।
- संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया की आधी आबादी पहले से ही खतरे वाले क्षेत्रों में रह रही है, जहां संबंधित प्रभावों से उनकी मृत्यु की संभावना 15 गुना अधिक है।
- पिछले 50 वर्षों में जलवायु-प्रेरित आपदाओं से होने वाली सभी मौतों में से लगभग 70 प्रतिशत दुनिया के 46 सबसे कम विकसित देशों में हुई है।

ऋण के NPA होने के 6 महीने के भीतर विलफुल डिफॉल्टर घोषित करें: RBI का प्रस्ताव

चर्चा में क्यों है?

- भारतीय रिजर्व बैंक ने गुरुवार को प्रस्ताव दिया कि ऋणदाताओं को अपने खाते को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) घोषित किए जाने के छह महीने के भीतर उधारकर्ता को 'जानबूझकर डिफॉल्टर' के रूप में वर्गीकृत करना चाहिए।
- आरबीआई के पास पहले कोई विशिष्ट समय सीमा नहीं थी जिसके भीतर ऐसे उधारकर्ताओं की पहचान 'जानबूझकर डिफॉल्टर' के रूप में की जानी थी।

- केंद्रीय बैंक ने कहा कि मानदंडों में संशोधन सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों के विभिन्न निर्णयों और आदेशों के निर्देशों और विचार के साथ-साथ बैंकों और अन्य हितधारकों से प्राप्त अभ्यावेदन और सुझावों की समीक्षा के बाद किया जायेगा।

विलफुल डिफॉल्टर या "जानबूझकर डिफॉल्टर" की क्या पहचान है?

- RBI "जानबूझकर डिफॉल्टर" की पहचान उन लोगों के रूप में करता है जो बैंक का बकाया चुकाने की क्षमता रखते हैं लेकिन वापस नहीं करते हैं या बैंक के फंड को डायवर्ट करता हैं।
- जबकि बड़े डिफॉल्टर का मतलब एक करोड़ रुपये और उससे अधिक की बकाया राशि वाला डिफॉल्टर है, और जिसके खाते को संदिग्ध या हानि के रूप में वर्गीकृत किया गया है, एक जानबूझकर डिफॉल्टर का मतलब एक उधारकर्ता या गारंटर है जिसने जानबूझकर डिफ़ॉल्ट किया है और बकाया राशि 25 लाख रुपये और उससे अधिक है।

RBI के प्रस्तावित मसौदा के प्रमुख बिन्दु क्या हैं?

- ऋणदाता 25 लाख रुपये और उससे अधिक या आरबीआई द्वारा समय-समय पर अधिसूचित बकाया राशि वाले सभी खातों में 'जानबूझकर डिफ़ॉल्ट' पहलू की जांच करेगा, और खाते को एनपीए के रूप में वर्गीकृत किए जाने के छह (6) महीनों के भीतर उधारकर्ता को जानबूझकर चूककर्ता के रूप में वर्गीकृत/घोषित करने की प्रक्रिया को पूरा करेगा।

- इसमें कहा गया है कि जानबूझकर चूक के सबूतों की जांच ऋणदाताओं द्वारा गठित एक पहचान समिति द्वारा की जानी चाहिए।
- किसी भी ऋणदाता द्वारा किसी विलफुल डिफॉल्टर या किसी इकाई जिसके साथ कोई इरादतन डिफॉल्टर जुड़ा हुआ है, को कोई अतिरिक्त ऋण सुविधा नहीं दी जाएगी। ऋणदाता द्वारा विलफुल डिफॉल्टर्स (एलडब्ल्यूडी) की सूची से विलफुल डिफॉल्टर का नाम हटा दिए जाने के एक साल बाद तक अतिरिक्त ऋण सुविधा पर रोक प्रभावी रहेगी।
- ऐसे मामलों में जहां ऋणदाता ने मुख्य देनदार द्वारा किए गए डिफ़ॉल्ट के कारण गारंटर पर दावा किया है, गारंटर की देनदारी तत्काल होती है।
- आरबीआई ने कहा, "यदि उक्त गारंटर ऋणदाता द्वारा की गई मांग का पालन करने से इनकार करता है, तो ऐसे गारंटर को भी जानबूझकर चूककर्ता के रूप में वर्गीकृत करने पर विचार किया जाएगा"।
- आरबीआई ने 31 अक्टूबर तक विभिन्न हितधारकों से ड्राफ्ट मास्टर डायरेक्शन पर टिप्पणियां मांगी हैं।